सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र:2026-27

कक्षा:7 | **विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक** | **पाठ:1 प्राकृतिक सुषमा**

मौखिक

क) पक्षी और फूल अलग-अलग रंग के तथा भाँति- भाँति के दिखाई पड़ रहे हैं।

(ख) कवि ने झरनों के जल की विशेषता यह बताई है कि झरनों का जल मीठा है।

(ग) बारी-बारी से दिन- रात के आने से तात्पर्य है कि यहाँ सूरज एवं चंद्र की शोभा भी अद्भुत है। कुछ समय के लिए चाँद अनंत तारामंडल के साथ आकर अपनी शोभा बिखेरता है तो कुछ समय के लिए सूर्य आकर अपनी शोभा बिखराता है।

(घ) पर्वत का विस्तार सीमा रहित है।

(लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-)

(क) इस पंक्ति में कवि का तात्पर्य भंवरों की गुंजायमान से है, उनके सुरीले बोलों से है।

(ख) भारत वर्ष में छह प्रकार की ऋतुएँ आती हैं और ये अपनी नई-नई शोभा के संग आती हैं।

(ग) परमेश्वर की लीला अद्भुत तथा अपरंपार है, यह लीला प्रकृति के हर एक कण में दिखाई देती है।

(घ) रात्रि का शरीर सूर्य चंद्र की शोभा तथा अनंत तारामंडल से सज जाता है।

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-)

(क) हमारे अनुसार कविता में वर्णित प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव करने के लिए मनुष्य

को आँखें बंद करके, ध्यान लगाकर प्रकृति की सुंदरता को अनुभव करना चाहिए।

(ख) प्रकृति के विभिन्न तत्वों जैसे पक्षी, फूल नदियाँ या पर्वत का मानव जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है क्योंकि ये मनुष्य को प्रसन्नता एवं जीवन तो देते ही हैं, साथ ही जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं।

(ग) कविता में ऋतुओं के परिवर्तनों से हमारे जीवन में, खान-पान में और रहन-सहन

में अनेक बदलाव आते हैं, जैसे कि सर्दियों में हम गर्म चीजों को पसंद करते हैं वैसे ही गर्मियों में ठंडे पेय पदार्थ अच्छे लगते हैं। इसी तरह से हमारे कपड़ों में भी बदलाव आता है तथा हमारे फल-सब्जी आदि भी परिवर्तित हो जाते हैं।

(घ) निर्मल जल के झरते झरने से कवि यह संदेश देना चाहता है कि प्रकृति हमेशा निर्मल रहती हैं तथा दूसरों के लिए अपना सर्वस्व लुटाती रहती है। जैसे झरने दूसरों के लिए झरते रहते हैं, वैसे ही हमें भी परोपकार की भावना रखनी चाहिए।

पठित गद्यांश

(क) कविता प्राकृतिक सुषमा कवि पंडित श्रीधर पाठक

(ख) कवि ध्यान लगाकर इस जग की सुंदरता को देखने के लिए कह रहे हैं।

(ग) ध्यान से देखने पर हर कण में ईश्वर की चतुराई दिखाई देगी ।

(घ) प्रभु , भगवान